दो हजार पच्चीस

सितारों ने रात के चादर में एक कहानी बुनी
पवन ने बहा दिया जो पूरे राष्ट्र ने सुनी ||
कहानी है वह हमारी भारत राष्ट्र की
कहानी है एक नए साल और नए सोच की || ①

धुंध भरे पर्वत से उठी एक सूर्यकिरण
उसके पीछे उठने लगे भारत के जनगण ||
ओ! आई है वह नई सुबह अच्छा सा ⑤
दो हजार चौबीस से दो हजार पच्चीस ||

इस नए साल में नया कुछ सोच ले
भारत के प्रगति के लिए नया कुछ बुन ले ||
सितारों की बुनी कहानी पहुंच गयी भारत
बनाने लगी भारत को सुंदर और सशक्त ||

P.T.O

उस कहानी का पहला सर्ग था कुछ ऐसा
कलकत्ते की एक स्त्री का घोर अपमान हुआ जैसा ||
जन राष्ट्र ने मचायी शोर जो हम न सुने, और
कभी सन्नाटे मे होती है वाक्यों से ज्यादा जोर || ④

कहानी न रुकी वह फिरसे चलने लगी |
लहरी ख्वाबों के चिराग को बुझाने लगी ||
जन गण के तलवार तब कुछ न कर सका
इनके फुसफुसाहट ने कुछ न बिगाडा उसका ||

कहानी की अंतिम चरण थी बहुत दुःखी
बारिश के जैसे भारत ने मारी झलांक सुखी || ⑥
भारत की उन्नति थोडी किनारे थी पर दूर ②
यह कहानी साथ रहेगी, बोलके जी हुजूर ||

P.T.O

हो गया है जाया साल अब कुछ नया सोचें।
कहानी के हजार गलतियाँ फिर न करने के सोचें ॥ (3)
हम सब जनता मिलकर सोचें कुछ सही
दो हजार पच्चीस में होगी सोच गई शब्द वही ॥

उपयुक्त बिंब / अलंकार

1. अनुप्रास
2. विरोधाभास
3. अतिशयोक्ति
4. प्रतीकवाद
5. द्वन्द्वात्मकता
6. तारतम्य

विभाजन - 7